कृषि उत्पादकता से अर्थ

कृषि उत्पादकता से अर्थ दो प्रकार से लगाया जाता है—एक तो प्रति हेक्टेअर कृषि उपज से व दूसरे प्रति व्यक्ति उपज के मूल्य से।

प्रति हेक्टेअर कृषि उपज से अर्थ है कि एक हेक्टेअर में कितना उत्पादन होता है। यही उस खेत की उत्पादकता है।

कृषि उत्पादकता का दूसरा अर्थ प्रति श्रमिक उपज के मूल्य से है अर्थात् एक खेत की कुल उपज के मूल्य में उसमें कार्य करने वाले श्रमिकों का भाग देकर जो फल आता है वह उस खेत की प्रति श्रमिक उत्पादकता है।

Scanned with CamScanner

कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता
(AGRICULTURAL PRODUCTION & PRODUCTIVITY)

भारत में पिछले 55 वर्षों में कृषि उत्पादन व उत्पादकता दोनों ही में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, चावल का उत्पादन जो 1950-51 में 206 लाख टन था वह 2004-05 में बढ़कर 910 लाख टन हो गया है। इसी अवधि में गेहूं का उत्पादन 65 लाख टन से 695 लाख टन, गन्ने का उत्पादन 570 लाख टन से 2,784 लाख टन हो गया है। इसी प्रकार भारत में कृषि उत्पादकता भी बढ़ी है। इन दोनों का विवरण निम्न तालिका से स्पष्ट हो जायेगा :[1]

(उत्पादन लाख टनों में व उत्पादकता प्रति हेक्टेअर किलोग्राम में)

वस्तु	1950-51		1980-81		2004-05	
	उत्पादन	उत्पादकता	उत्पादन	उत्पादकता	उत्पादन	उत्पादकता
चावल	206	668	536	1,336	910	2,026
गेहूं	65	663	363	1,630	695	2,718
गन्ना	570	33,000	1,542	58,000	2,784	64,000
आलू	N.A.	7,000	97	13,000	233	18,000

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि चावल की उत्पादकता जो 1950-51 में 668 किलोग्राम प्रति हेक्टेअर थी वह 2004-05 में 2,026 किलोग्राम प्रति हेक्टेअर हो गई है। इसी प्रकार 1950-51 व 2004-05 में गेहूं का उत्पादन 663 से 2,718, गन्ने का 33,000 से 64,000, आलू का 7,000 से 18,000 किलोग्राम प्रति हेक्टेअर हो गया है।

भारत में कृषि उत्पादकता (i) प्रति हेक्टेअर, तथा (ii) प्रति श्रमिक दोनों ही दृष्टि से कम है जैसा निम्न आंकड़ों से स्पष्ट होता है :

"भारत में गेहूं का प्रति हेक्टेअर उत्पादन 2,718 किलोग्राम है जबकि ब्रिटेन में 7,468 किलोग्राम व फ्रांस में 6,632 किलोग्राम है। इसी प्रकार भारत में चावल व धान का प्रति हेक्टेअर उत्पादन 2,026 किलोग्राम है, जबकि इजिप्ट में 8,567 किलोग्राम, जापान में 6,416 किलोग्राम, अमरीका में 6,609 किलोग्राम व चीन में 6,331 किलोग्राम है। मूंगफली में भी प्रति हेक्टेअर उत्पादन भारत में 1,050 किलोग्राम है, जबकि अमरीका में 2,828 किलोग्राम व चीन में 2,574 किलोग्राम। भारत में कपास का उत्पादन 324 किलोग्राम प्रति हेक्टेअर है, जबकि अमरीका में 769 व इजिप्ट में 873 किलोग्राम है।"[2]

सम्पूर्ण भारत के लिए, मूल्य की दृष्टि से, प्रति श्रमिक उत्पादकता 1,213 रुपए प्रति हेक्टेअर है। लेकिन क्षेत्रीय दृष्टि से सम्पूर्ण भारत में कृषि उत्पादकता में समानता नहीं है। जिन स्थानों पर भूमि उपजाऊ है तथा अन्य सुविधाएं, जैसे सिंचाई आदि उपलब्ध हैं तथा जहां नकद फसल अधिक होती है वहां **प्रति हेक्टेअर उत्पादन का मूल्य अधिक है**, जैसे केरल 2,072 रुपए, पंजाब 3,195 रुपए, हरियाणा 2,922 रुपए, गुजरात 1,457 रुपए, उत्तर प्रदेश 1,236 रुपए, मध्य प्रदेश 859 रुपए।

भारतीय कृषि में अन्य देशों की तुलना में श्रम उत्पादकता (Labour Productivity) कम है जो डॉलरों में 395 डॉलर है, जबकि आस्ट्रेलिया में 31,432 डॉलर, ब्रिटेन में 34,730 डॉलर व जापान में 30,620 डॉलर है।

उत्पादकता निर्धारण के तत्व
अथवा
भारत में न्यून कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता के कारण

भारतीय कृषि में न्यून उत्पादकता या पिछड़ेपन होने के कई कारण हैं जिनको पांच भागों में विभाजित किया जा सकता है—(I) प्राकृतिक कारण, (II) तकनीकी कारण, (III) आर्थिक कारण, (IV) संस्थागत कारण, (V) अन्य कारण। इन्हीं कारणों को उत्पादकता निर्धारण के तत्व भी कहते हैं।

(I) प्राकृतिक कारण

भारत की कृषि प्रकृति पर निर्भर है जिसमें विशेष रूप से वर्षा पर। वर्षा निश्चित नहीं है कभी अधिक व कभी न्यून हो जाती है। इसी कारण भारतीय कृषि को '**मानसून का जुआ**' कहा जाता है।

1. *Economic Survey*, 2005-06, p. S-16.
2. *Indian Agriculture in Brief* 27th ed. & *Economic Survey*, 2005-06.

Scanned with CamScanner

(1) **मिट्टी में दोष**—भारतीय मिट्टी में भी कुछ दोष पाया जाता है जिससे उसकी उत्पादकता कम हो जाती है; जैसे यहां की मिट्टी में नाइट्रोजन की कमी, भूमि का कटाव, पानी का भरना, आदि पाया जाता है।

(II) तकनीकी कारण

तकनीकी कारणों में उत्पादन की पुरानी तकनीक, अच्छे बीजों व रासायनिक खादों के उचित प्रयोग का अभाव, अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएं, फसलों की सुरक्षा का अभाव, आदि है जिनका विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है :

(2) **उत्पादन की पुरानी तकनीक**—आज भी अधिकांश किसान उत्पादन की पुरानी तकनीक लकड़ी का हल व खुरपी को ही काम में ला रहे हैं, जबकि बाजार में आधुनिक इस्पात के हल, ट्रैक्टर, थ्रेसिंग मशीन, पानी के लिए डीजल पम्प, आदि उपलब्ध हैं।

(3) **अच्छे बीजों व रासायनिक खादों के उचित प्रयोग का अभाव**—भारत में कृषि उत्पादन के कम होने का एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि भारतीय किसान अच्छे उन्नत बीजों का उपयोग नहीं करता है। वह अपनी भूमि पर उत्पादित फसल को ही बीज के लिए काम में लाता है जो अधिकांशतः अच्छे बीज नहीं होते हैं। साथ ही वह परम्परावादी होने के कारण अच्छी रासायनिक खादों का प्रयोग भी नहीं करता है। भारत में रासायनिक खादों का प्रयोग प्रति हेक्टेअर में 96.6 किलोग्राम है जो कि बहुत ही कम है, जबकि अन्य देशों में खादों का प्रयोग बहुत अधिक है; जैसे, जापान 365 किलोग्राम, बेल्जियम 276 किलोग्राम, संयुक्त अरब गणराज्य 400 किलोग्राम।

(4) **अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएं**—भारत में सिंचाई सुविधाएं पर्याप्त मात्रा में न होने के कारण भी कृषि उत्पादन कम ही होता है। भारत में केवल 40 प्रतिशत भूमि को ही सिंचाई सुविधाएं मिल पाती हैं। शेष मानसून पर निर्भर है।

(5) **फसलों की सुरक्षा का अभाव**—भारत में न्यून उत्पादकता का एक कारण फसलों की कीड़े-मकोड़े व रोगों से सुरक्षा न कर पाना भी है। **राष्ट्रीय व्यावहारिक आर्थिक शोध संस्थान** के अनुसार भारत में कुल खाद्यान्नों का 16 प्रतिशत इन कीड़ों व रोगों से नष्ट हो जाता है।

(III) आर्थिक कारण

(6) **पर्याप्त वित्त का अभाव**—भारतीय कृषकों के बारे में कहा जाता है कि वे सदा ही ऋणों से दबे रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे अपने कृषि व्यवसाय में उत्पादन वृद्धि के लिए धन का विनियोजन करने में असमर्थ रहते हैं। जब कृषि में आधारभूत आदानों (inputs) की कमी रहती है तो उत्पादन भी कम ही होता है।

(IV) संस्थागत कारण

संस्थागत कारणों में दो कारण हैं—जोतों का आकार छोटा होना व भूमि व्यवस्था।

(7) **जोतों का आकार छोटा होना**—उत्पादन कम होने में एक कारण जोतों का छोटा होना है। यहां पर औसत आकार 1.55 हेक्टेअर है, जबकि अन्य देशों में औसत आकार बहुत अधिक है, जैसे, ऑस्ट्रेलिया में 1,993, अर्जेण्टीना में 270, कनाडा में 188 व अमरीका में 158 हेक्टेअर है। इसके साथ-साथ हमारे देश की 61.58 प्रतिशत जोतें 1 हेक्टेअर से भी कम हैं तथा 31 प्रतिशत जोतें 1 हेक्टेअर से 4 हेक्टेअर तक के मध्य में हैं। इस प्रकार यहां 92.6 प्रतिशत जोतें 4 हेक्टेअर तक की हैं।[1]

(8) **भूमि व्यवस्था**—भारत में यद्यपि जमींदारी प्रथा समाप्त हो चुकी है तथा भूमि-सुधार लागू हैं फिर भी अनेक क्षेत्रों में वास्तविक रूप में कृषकों को भूमि उपलब्ध नहीं हो पायी है। जिन व्यक्तियों के पास बड़े-बड़े खेत हैं वे अपने खेतों को पट्टेदारी व आध-बंटाई पर दे देते हैं। इस प्रकार जो व्यक्ति खेतों की जुताई, आदि कार्य करते हैं वे भूमि के स्वामी न होने के कारण कृषि क्रियाओं पर उचित ध्यान नहीं देते हैं जिसके फलस्वरूप उत्पादन कम मात्रा में होता है।

(V) अन्य कारण

(9) **कृषकों का परम्परावादी दृष्टिकोण**—भारतीय कृषि उत्पादकता के कम होने में एक महत्वपूर्ण कारण कृषकों का परम्परावादी दृष्टिकोण है जिसके अनुसार वे आधुनिक तकनीक को अपनाने में संकुचाते हैं। इसके लिए कृषकों की अशिक्षा, अज्ञान तथा अन्धविश्वास उत्तरदायी हैं।

[1] *Indian Agriculture in Brief 27th ed. & India 2004.*

Scanned with CamScanner

(10) **कृषि पर जनसंख्या वृद्धि का बढ़ता हुआ भार**—भारतीय कृषि पर जनसंख्या का दबाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। 1901 की जनगणना के अनुसार भारत में प्रति व्यक्ति क्षेत्रफल 1.11 हेक्टेअर था जो वर्तमान में घटकर 0.38 हेक्टेअर रह गया है। यह भी कृषि की न्यून उत्पादकता का एक कारण है।

(11) **सामाजिक संगठन**—कृषकों का सामाजिक संगठन भी न्यून उत्पादन के लिए उत्तरदायी है। इसमें संयुक्त परिवार प्रणाली का बोलबाला है जिसमें प्रेरणा का अभाव है। साथ ही जाति प्रथा के कारण समाज के द्वारा भी पूर्ण सहयोग नहीं दिया जाता है। इस प्रकार प्रेरणा व प्रलोभन के अभाव में प्रोत्साहन न मिलने के कारण उत्पादन कम ही होता है।

(12) **कृषि अनुसन्धान की जानकारी का अभाव**—यद्यपि भारत में कृषि अनुसन्धान पर काफी जोर दिया जा रहा है, लेकिन फिर भी कृषि अनुसन्धान के परिणाम कृषकों तक नहीं पहुंच पाते हैं और इस प्रकार अपने प्रयत्नों में उन अच्छी बातों को शामिल नहीं कर पाते हैं जिनसे उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।

Scanned with CamScanner